

## सारांश\*

संकट से जूझती दुनिया में पूँजीवाद विरोधी सिद्धांत और क्रिया की गंभीर आवश्यकता को इन दिनों व्यापक रूप से महसूस किया जा रहा है। हाल के समय में विद्वानों के बीच चल रही चर्चा में इस संबंध में एक समझ दिखाई दे रही है, और उग्र सिद्धांत तथा वर्तमान में जारी पद्धतियों के बीच संबंधों पर बारीकी से चर्चा शुरू हो चुकी है लेकिन ये अब भी काफी कम हैं। इस लेख में, हम भारत के महाराष्ट्र राज्य के कोरची नामक गांव में किए जा रहे सामुदायिक वनीकरण के प्रसंग का अध्ययन कर रहे हैं। इस कार्य में ८७ ग्रामीण संस्थान और उनके फेडरेशन मिलकर आसपास के वनों का संवर्धन कर रहे हैं। वे पर्यावरणीय दृष्टि से स्थायी एवं लोकतांत्रिक रूप से मिलजुल कर उनकी देखरेख और उनका प्रबंधन भी कर रहे हैं। हमने एरियल सालेह के मेटाबोलिक वैल्यू (चयापचयी मूल्य) की परिकल्पना के साथ ही मार्क्स के मूल्य संबंधी श्रम के सिद्धांत एवं मेटाबोलिक संघर्ष की कल्पना का उपयोग किया है। इस तरह से हमने यह जानने का प्रयास किया है कि कोरची द्वारा किया गया पर्यावरणीय आत्मनिर्भरता का प्रयास उसके ग्रामीण जनों द्वारा अपने वनों के साथ जोड़े गए विभिन्न सिद्धांतों के बीच किस तरह से एक बेहतरीन संतुलन स्थापित करता है। इसमें हमें कोरची के ग्रामीणों को मेटा-इंडस्ट्रियल श्रम के रूप में देखने की आवश्यकता है। सालेह उन कामगारों के लिए इसी शब्द का उपयोग करती हैं जिनकी कार्य पद्धतियों में देखभाल और पारस्परिक आदान-प्रदान की भावना निहित है-जो पूँजीवाद में विशेषकर हाशिए पर दिखाई देती है। मूल्य संबंधों के (विश्लेषण संबंधी) लेन्स (दृष्टिकोण) का उपयोग करके, हमने यह दिखाने का प्रयास किया है कि वनों के प्रति ऐसी पद्धतियों ने किस तरह से मानवों और प्रकृति के बीच एक स्वस्थ मेटाबोलिक (सामंजस्यकारी) संबंध बनाने में मदद की है और जिस पर विनिमय मूल्य संबंधी चिंताओं का कोई प्रभुत्व नहीं है। इस प्रकार से हमने एक ऐसी संकल्पना प्रस्तुत की है जो दिखाती है कि किस प्रकार पूँजीवाद विरोधी सिद्धांत संवर्धन की मुख्य धारा को वास्तविक दुनिया द्वारा अपनाए गए पर्यायों को बेहतर आधार दे सकता है।

**कीवर्ड्स:** मेटाबोलिक रिफ्ट, मेटाबोलिक वैल्यू, कंजर्वेशन ऑल्टर्नेटिक्स, कम्युनिटी फॉरेस्ट गवर्नेंस, इंडियन आदिवासी वर्ल्डव्यूज, पोस्ट-कैपिटलिज्म

\*Translation provided by author